श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली): पान उनके मुंह में है या आपके कान में? (**व्यवधान**)

श्री नवल किशोर शर्मा : श्री वाजपेयी ने मेरी मदद की है, उसके लिए धन्यवाद ।

सभापति महोदय : कान पर भी असर पड़ जाता है (**व्यवधान**)

श्री नवल किशोर शर्मा : व्यापारियों और उद्योग मालिकों का भुगतान रुका रहता है और लाखों करोड़ों रुपयों के लेन-देन बैंकों में रुके रहते हैं, या फिर व्यापारी या उद्योग मालिक बैंक का कार्य बन्द होने के कारण क्लीयरिंग से वंचित रहते हैं ।

यह भी देखा गया है कि राष्ट्रीयकृत बैंक कर्मचारी अपने उपभोक्तायों, व्यापारियों, उद्योग मालिकों को यद-कदा बे-वजह परेशान करते रहते हैं । पंजाब नैशनल बैंक, रांची और पंजाब एन्ड सिन्ध बैंक, श्रीगंगानगर (राजस्थान) के कर्मचारियों और प्रबन्धकों के बीच विवाद उत्पन्न हो जाने से दोनों स्थानों पर स्थानीय क्लीयरिंग हाउस बन्द हैं, जिससे वहां के स्थानीय व्यापारी तथा उद्योग मालिक अपने भुगतान के न होने से परेशान हैं । श्रीगंगानगर में पिछले दो महीने से क्लीयरिंग हाउस का कार्य बन्द होने के कारण इन व्यापारियों का व्यापार ढांचा ही चरमरा गया है ।

एक और बात कहना चाहूंगा कि राष्ट्रीयकृत बैंकों के जिन उपभोक्ताओं की मृत्यु हो गई है, , उनके उत्तराधिकारियों को उनके खाते में जमा-पूंजी निकालने के लिए काफी लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़ता है और इन उत्तराधिकारियों को अनेक जटिल प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए बाध्य किया जाता है, जबकि इनको मिलने वाली राशि के बराबर तो कानूनी कार्यवाही में पूरा खर्च हो जाता है ।

मैं वित्त मन्त्री महोदय से निवेदन करूंगा कि वह इस सम्बन्ध में अविलम्ब ऐसी व्यवस्था करें कि बैंक कर्मचारियों और प्रबन्धकों के मध्य किसी भी विवाद के कारण उपभोक्ताओं, व्यापारियों, उद्योग मालिकों का भुगतान न रुका रहे और क्लीयरिंग हाउस अपना कार्य सुचारू रूप से कर सके ।

(v) Recent strike by workers of clearing Agents of Bombay port.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY (Nizamabad): On account of the recent strike by the workers of the clearing Agents the operations at the Bombay port have come to a complete standstill. Many ships as a result of the strike, had to be turned away and the exporters could not execute their contracts and they were put to a heavy loss and the country also loss valuable foreign exchange. Everybody knows the position in the Bombay port and many vessels have to stay on the high seas for days together and even as long as a month, for want of berths in the port where the loading and unloading operations are going on at a snail's pace. During the strike no goods could be lifted and taken out of the port except on a permit issued by the workers' union. There is heavy congestion in the port. It is common knowledge that many exporters and importers try to avoid Bombay port and have the ships sent to Kandla or Goa. It is high time that the Government realised the gravity of the situation and took proper and firm measures to see such things do not happen in the premier port of the country.

Sir, I request the Government to take firm action.

(vi) Need to provide more facilities for the development of National School of Drama.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (New Delhi): The National School of Drama has rendered great service to the cause of Theatre in India.

During its 23 years of existence, in spite of limited resources and several other constraints the school has ad-

ded a new dimension to the Hindi stage and produced excellent plays by upcoming artists.

Unfortunately, facilities at the School are woefully inadequate which, not only hamper the growth of a new theatre movement in the country, but also discourage educated boys and girls, who want to serve the cause of this art, by devoting themselves to it fully, and thus make their contribution to an important aspect of culture.

What is required is an independent campus for the School, University status for the institution, abolition of entertainment tax on staging of plays and better hostel facilities.

On the occasion of "the World Theatre Day" Students of the National School of Drama are marching to Parliament House to highlight their grievances and get speedy redressal.

I hope the voice of the young artists will evoke sympathetic consideration of their problems and the Government will come out with a clear-cut policy on the development of Theatre in the country.

(vii) Unauthorised use of mosques and other places of worship in Delhi.

श्री अशफाक हुसैन (महाराजगंज): मैं एवान को तवज्जह राजधानी दिल्ली में मस्जिदों और इबादतगाहों की तबाही और नाजायज कब्जे की तरफ दिलाना चाहता हूं। पुरानी दिल्ली में जामा मस्जिद के इलाके में ऐसे मुताद्दिद मस्जिद हैं जिनको होटलों, दुकानों दफातिर, और रिहाइशगाहों में तबदील कर दिया गया है। इन इबादतगाहों से नाजायज कब्जा हटाने में वक्फ-बोर्ड की गफलत, कोताही और ना-अहली और वक्फ कवानीन की कमजोरी और पुलिस और हुकूमत के अमले की लापरवाही और मिली-भगत की वजह से कोई अमली कदम नहीं उठा पा रहा है।

मिसाल के तौर पर जामा-मस्जिद दिल्ली के शुमाल में वाक्या दरीबा की मस्जिद शर्फ-उद्दौलाजो नवाब साहब की मस्जिद के नाम से मशहूर है। इस मस्जिद से मुत्तसिल एक मदरसा भी है। इस मस्जिद के सहन में एक करोड़पति सिर्फ और दूसरे दुकानदारों ने दफातिर और दूसरे मुलाजमीन के लिये रिहायशगाहों में तबदील कर रखा है। इसी तरह मस्जिद खजूर, चावड़ी बाजार और मस्जिद काजीहाली, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन को भी दुकानों और होटल में तबदील किया जा चुका है। मुसलमानों के मुसलसल मुतालबे के बावजूद हुकूमत की जानिब से नई दिल्ली की मस्जिद कोटला मुबारकपुर में नमाज पढ़ने की इजाजत नहीं दी जा रही है। शान्तिवन में नेहरू समाधि के करीब वाक्या मस्जिद को डी.डी.ए. ने मस्नुई टीले पर घनी झाड़ियां और दरख्त लगा कर ढक दिया है।

सैकुलर हिन्दुस्तान की राजधानी में जहां इस वक्त मर्कजी हुकूमत है कि सीधी अलमदारी है, मस्जिदों पर मलाजिम और उन की तबाही और बरबादी रोकी जानी चाहिये थी। हुकूमते-हिन्द को चाहिये कि वह इस तरफ खुसूसी तवज्जह दे और 6 माह की मुकर्रा-मुद्दत के अन्दर इन मसाजिद की बहाली के लिए अमली कदम उठाये। वक्फ के कवानीन में जो खामियां हैं उन्हें आर्डिनेंस के जरिये दूर करें। वक्फ की जायदादों पर से कब्जा हटाने के लिए वही कानून इस्तेमाल किया जाए जिस के तहत सरकारी इमलाक पर से नाजायज फब्बे हटाए जाते हैं। औकाफ को रेंट कन्ट्रोल के कानून से मुस्तसना करार दिया जाय और बनी कमेटी की सिफारिश पर अमल किया जाय।

شری اشفاق حسین (مہاراج گنج):

میں ایوان کی توجہ راجدھانی دلی میں مسجدوں اور عبادت گاہوں کی تباہی اور ناجائز قبضے کی طرف دلانا چاہتا ہوں - پرانی دلی میں جامع مسجد کے علاقے میں ایسی متعدد مساجد ہیں - جن کو ہوٹلوں دکانوں دفاتر اور رہائش گاہوں میں تبدیل کر لیا